वैदिक विज्ञान की ओर .....

12

आज संसार इसी भंवरजाल में फंसा आर्तनाद कर रहा है। हम वैज्ञानिकों एवं उनकी भ्रान्ति की चर्चा के उपरान्त विभिन्न सम्प्रदायों एवं उनकी दार्शनिक मान्यताओं पर भी कुछ चर्चा करते हैं। हम यह बात स्पष्टता से जानते हैं कि हर सम्प्रदाय एवं उनका आधार ग्रन्थ, जो ईश्वर की सत्ता में विश्वास करता है, ईश्वर को सृष्टि का रचयिता व संचालक मानता है। कोई सम्प्रदाय यह नहीं मानता कि उसका ईश्वर, जिसे वह खुदा, गॉड अथवा कुछ भी क्यों न कहता हो, उसी सम्प्रदाय के मनुष्यों को पैदा करता व पालता है, बल्कि वह उसे संसार का पिता-माता मानता है। किन्तु संसार में जब वह व्यवहार करता है, तब स्वयं को अपने मजहब, धर्म वा कथित जाति की जंजीरों में बांध कर अन्य मनुष्यों को सृष्टि से कोई बाहरी जीव जैसा मानकर व्यवहार करता है। यह दुर्गति संसार के सभी समुदायों में देखी जा रही है। ईसाई एक बाइबिल के अनुयायी होकर भी कैथोलिक व प्रोटेस्टेन्ट के वर्गों में बंटे हैं। एक कुरान के मानने वाले मुसलमान भी शिया-सुन्नी आदि अनेक फिरकों में खण्ड-२ होकर आपस में खून बहा रहे हैं। इधर हिन्दुओं में तो कोई सीमा नहीं है। हजारों प्राचीन शरीरधारी भगवान्, हजारों सम्प्रदाय, हजारों वर्तमान नकली भगवान्, अविद्या व पाप के भण्डार असंख्य गुरु, हजारों कथित जातियां-उपजातियां, उन जातियों के पृथक्-२ भगवान्, न जाने कैसा-२ विघटन, यह हिन्दू समाज की दुर्दशा के लिए उत्तरदायी है। यहाँ तो ईंट, पत्थर, नदी, सर्प, वृक्ष भी भगवान् हैं। वस्तुतः वह इन सबको पूजता है परन्तु वास्तव में पूजनीय सृष्टि रचयिता, सर्वव्यापक, निराकार, वास्तविक परमात्मा की उपासना नहीं करता।

ऐसी दुःखद स्थिति में ब्रह्माण्ड की बात क्या करें, इस पृथ्वी और यहाँ तक कि भारत व हिन्दू की एकता भी कैसे सम्भव है? धर्म व ईश्वर को मात्र आस्थाओं का विषय मानकर अविद्या अंधकार में डूबा यह समाज व संसार पूज रहा है। यथार्थ तर्क व विज्ञान का कोई स्थान धर्म में नहीं रहा है। वस्तुतः ये सभी ईश्वरवादी ईश्वर को मानते हुए भी यह स्वप्न में भी नहीं जानते कि वह ईश्वर कैसा है? वह सृष्टि की रचना व उसका संचालन कैसे करता है? उसका क्रिया-विज्ञान क्या है? इस यथार्थ ज्ञान के अभाव में सभी मनुष्य अविद्या अंधकार में भटक रहे तथा परस्पर दुःखों के बीज बो रहे हैं।

इन सब भटकते हुए मानवों, चाहें वे वैज्ञानिक हों वा ईश्वरवादी साम्प्रदायिक महानुभाव अथवा वामपंथी वा अनीश्वरवादी समुदायों के अनुयायी, सभी को सत्य का यथार्थ मार्ग सुझायेगा हमारा वैदिक विज्ञान।

क्रमशः .....

-आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक